

बलिहारी बलिहारी, म्हारा सतगुरुवा ने बलिहारी ।
बंधन काट किया जीव मुक्ता, और सब विपति विडारी ॥

वाणी सुणत परम सुख उपज्या, दुर्मति गई हमारी ।
करम भरम का शंसय मेट्या, दिया कपाट उघारी ॥ १ ॥

माया ब्रह्म भेद समझाया, सोहम लिया विचारी ।
पूरण ब्रह्म रहे उर अन्दर, काहे से देत विडारी ॥ २ ॥

मौ पे दया करी मेरा सतगुरु , अबके लिया उबारी ।
भव सागर से डूबत तारया, ऐसा पर उपकारी ॥ ३ ॥

गुरु दादू के चरण कमल पर, रखू शीश उतारी ।
और क्या ले आगे रखू, सादर भेंट तिहारी ॥ ४ ॥

जय श्री नाथजी की